रात्रि क्लास 24/11/68 ओम शांति शिवबाबा याद है?
अब पढ़ाई पढ़ रहे हो और खान-पान की शुद्धता भी सीख रहे हो। क्या-2 आगे खाते थे, कितना फर्क है! 60 वर्ष के एक वर्ष आगे क्या खाते थे? सभी कुछ खाते थे; क्योंकि बाप ने 60 वर्ष की वानप्रस्थ अवस्था में प्रवेश किया ना। अभी यह पुरानी दुनिया ही बदलनी है। नई दुनिया में देवी-देवताएँ ही रहते हैं। नई दुनिया और पुरानी दुनिया में कितना फर्क है। बहुत फर्क है! तुम कह सकते हो, आज रावण राज्य है, कल रामराज्य होगा। चित्र पर भी समझाते हो, आज है रावण राज्य पतित दुनिया, कल पावन दुनिया होनी है। बच्चे जानते हैं तब तो समझाते हैं। कल माना ही दूसरे जन्म में। दुनिया को कोई को भी यह ध्यान में नहीं आ(ता) है सतयुग आना है। इस दुनिया का विनाश होना है। गीता का एपिसोड है, यह कोई भी जानते ही नहीं। तुम सिद्ध कर बताते हो, यह गीता का एपिसोड है। यह कोई जानते ही नहीं। हम राजयोग सीख रहे हैं। राजाई होती है सतयुग में। तो ज़रूर दूसरे जन्म में हमको राजाई पद पाना है। अभी है संगमयुग, फिर होगा सतयुग। और सभी धर्म विनाश को पाते हैं। तुम्हारी बुद्धि कितनी दूरन देश जाती है। बाप को, घर को, स्वर्ग को भी जानते हो। कल स्वर्ग आने वाला है। बच्चों को ही यह नॉले(ज) मिली हुई है ना। गायन भी (है) अति इन्द्रिय सुख गोप-गोपियों से पूछो। यह पिछाड़ी की अवस्था है। अभी इतना हर्षित नहीं रहते हैं जितना पिछाड़ी में रहते हैं। पिछाड़ी में निश्चय भी अडोल रहता है। अभी तुम बच्चे समझते हो हम यूनिवर्सिटी में भी रहते हैं, तो हॉस्टल में भी नहीं रहते हैं। बाहर का संग बच्चों को न लगे इसलिए हॉस्टल में बिठाया जाता है। टीचर के साथ भी होंगे। बाहर के संग से दूर रहना अच्छा है। तुम्हारी भी स्टूडेंट लाइफ है। ऐसे नहीं हॉस्टल में रहने वाले ही पास होते हैं। ऐसे भी नहीं है। कोई-2 खरमगज बच्चे साहुकारों के भी होते हैं कोई ऑर्डर कर सकते हैं। हॉस्टल में रहने वालों का खर्चा भारी आता है। शरीर निर्वाह अर्थ बाहर ही रहना पड़ता है; क्योंकि ऐसे अगर अलाउ किया जाये यहाँ रहने का, तो बहुत ऐसे आ जावेंगे। भल रूहानी सर्विसएबुल हैं तो भी नहीं ऐसे कर सकते। शरीर निर्वाह लिए करना ही पड़े। आगे चल हो सकता है। जैसे तुम रहते हो, ऐसे रहे और यहाँ यज्ञ की सेवा करने भी बहुत आते हैं। उन्हों की कमाई बहुत भारी होती है। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट।

प्वाइंट्स :– देह अभिमानी कब बाप के दिल पर चढ़ न सकें। जो दिल पर सो तख्त पर। माया बड़ी जबरदस्त है। देह का अहंकार इतना आ जाता है जो एकदम बुद्धि ही चट हो जाती है। इसलिए बाप कहते हैं खबरदार रहो। महारथियों पर ही माया का वार होता है। अच्छे-2 बच्चे जो मम्मा को भी मोटर में घुमाती थी वह आज है नहीं। बाप तो वॉरनिंग देते रहते हैं। योगबल न होगा तो पाप कटेंगे नहीं। याद बिगर पावन कैसे बनेंगे?

बाप कहते हैं तुम बच्चों को बहुत मीठा बनना है। बाप कितना मीठा है! उनके ही तुम बच्चे हो ना। तो जैसे वह मीठा है वैसे तुम बच्चों को भी होना चाहिए। जैसे वह ज्ञान का सागर, सुख का सागर, प्रेम का सागर है, तुमको भी ऐसा बनना है। जब तुम देवता होंगे तो तुम्हारी महिमा और होगी। अभी तुम्हारी महिमा और है। मनुष्यों की महिमा, तुम संगमयुगी ब्राह्मणों की महिमा अलग है, जिसको कोई भी नहीं जानते। यह संगमयुग की पढ़ाई पढ़े तब पता पड़े। मनुष्यों ... को तो कुछ भी पता नहीं है। कृष्ण को ही द्वापर में ले गये हैं कि द्वापर में गीता सुनाई। यह कैसे हो सकता? तो अपने ऊपर नज़र रहनी चाहिए। बाप ने कहा है देही अभिमानी भव। मामेकम् याद करो तो पाप भस्म होंगे। सारे विश्व को पवित्र बनाने तुम निमित्त बनते हो। कितनी अलौकिक सर्विस है! तुम ब्राह्मणों के सिवाय और कोई यह अलौकिक सर्विस कर न सके।